IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

‘आधुनिक उपन्यासों में स्त्री के मानवीय रूप को स्थापित करता स्त्रीवाद’

डॉ. वृषाली विकास मिणचेकर

अध्यक्षा, हिंदी विभाग

सहकारभूषण एस. के. पाटील महाविद्यालय, कुरूंदवाड।

शोध सारांश

हिंदी उपन्यास साहित्य में विशेष रूप से स्त्री के जीवन से जुड़े यथार्थ को व्यापक एवं संवेदनशील दृष्टि से चित्रित किया है। आज़ादी के बाद भारतीय समाज में तेजी से परिवर्तन आया। शिक्षा का प्रचार हुआ, स्त्रियाँ घर की चारदीवारी से बाहर निकली और पारंपरिक सामाजिक संरचना में बदलाव दिखाई देने लगा। इसी विषय को लेकर आधुनिक हिंदी उपन्यासों में स्त्रीवाद एक सशक्त वैचारिक धारा के रूप में विकसित हुआ। आधुनिक हिंदी उपन्यासकारों में सुरेंद्र वर्मा, चित्रा मुद्‌गल, उषा प्रियंवदा, अनुसिंह चौधरी आदि ने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री की समस्याओं, अधिकारों एवं स्वतंत्र अस्तित्व को गंभीरता से प्रस्तुत किया। शोधालेख में ‘मुझे चाँद चाहिए’, ‘आवाँ’, ‘नदी’ तथा ‘भली लड़कियाँ, बुरी लड़कियाँ’ आदि उपन्यासों पर स्त्रीवाद की दृष्टि से चर्चा की गई है। इन्होंने स्त्री को केवल आदर्श या पूजनीय रूप में नहीं बल्कि एक सामान्य मनुष्य के रूप में चित्रित किया। इन उपन्यासकारों द्वारा स्त्री की आकांक्षाएं, शोषण, आत्मनिर्भरता, संघर्ष, बदले की भावना आदि स्त्री के सभी मनोभावों का सूक्ष्मता से चित्रिण किया गया।

DOI: 10.48175/IJARSCT-37550

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

बीज शब्द :

आधुनिक उपन्यास, 'मुझे चाँद चाहिए', 'आवाँ', 'नदी', 'भली लड़कियाँ, बुरी लड़कियाँ, स्त्रीवाद, मानवीय रूप, स्त्री शोषण, संघर्ष, बदले की भावना आदि ।

प्रस्तावना :

हिंदी उपन्यास साहित्य भारतीय समाज की सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक परिस्थितियों का दर्पण रहा है। आधुनिक हिंदी उपन्यासों में सामाजिक जीवन के विभिन्न आयामों को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। विशेष रूप से स्त्री के जीवन से जुड़े यथार्थ को आधुनिक उपन्यासों ने व्यापक एवं संवेदनशील दृष्टि से चित्रित किया है। आज़ादी के बाद भारतीय समाज में तेजी से परिवर्तन आया। शिक्षा का प्रचार हुआ, स्त्रियाँ घर की चारदीवारी से बाहर निकली और पारंपरिक सामाजिक संरचना में बदलाव दिखाई देने लगा। इसी विषय को लेकर आधुनिक हिंदी उपन्यासों में स्त्रीवाद एक सशक्त वैचारिक धारा के रूप में विकसित हुआ। प्रारंभिक दौर में स्त्रीवाद का केंद्र स्त्री की सामाजिक स्थिति, शिक्षा एवं अधिकारों तक सीमित था। इस दौर में स्त्री को पीड़िता के रूप में चित्रित किया गया। वह समाज की कुरीतियों से संघर्ष करती हुई दिखाई गई। किंतु समय के साथ इसका स्वरुप व्यापक और बहुआयामी हो गया। आज स्त्री विमर्श केवल पुरुष विरोध नहीं बल्कि समानता, स्वतंत्रता और आत्म पहचान की खोज का आंदोलन बन गया है। "स्त्री सशक्तिकरण के जो भी प्रश्न समाज में प्रकट हो रहे हैं, साहित्य उनसे निरपेक्ष नहीं रह सकता। हर काल में स्त्रियों के सबलीकरण के प्रश्न बदलते रहे हैं।"[1] आधुनिक हिंदी उपन्यासों में इन्हीं प्रश्नों को लेकर चलाए गए आंदोलन का यथार्थ चित्रण नज़र आता है। इस आंदोलन का मुख्य उद्देश्य सामाजिक वर्जनाओं को चुनौती देना है। समाज में ऐसे कई नियम बनाए गए हैं जो विशेष रूप से स्त्री पर लागू होते हैं। पुरुष के लिए जो व्यवहार सामान्य माना जाता है, वह स्त्री के लिए अनुचित समझा जाता है। इस दोहरे मापदंड को हिंदी उपन्यासकारों ने अपने लेखन में प्रस्तुत किया। नैतिकता के मापदंड केवल स्त्री के लिए ही क्यों? इस प्रश्न की ओर उन्होंने समाज का ध्यान आकर्षित किया। इन उपन्यासकारों ने स्त्री की इच्छाओं,

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

आकांक्षाओं और संघर्षों को केंद्र में रखा। इन्होंने स्त्री-पुरुष संबंधों, परिवार संस्था, प्रेम और देह जैसे विषयों पर खुलकर चर्चा आवश्यक मानी। स्त्री को केवल त्याग और समर्पण की प्रतिमूर्ति के रूप में प्रस्तुत करने की पंरपरा टूटने लगी जिसके स्थान पर स्त्री को एक स्वतंत्र व्यक्ति, संघर्षशील मानव और सामाजिक यथार्थ से जुड़ी हुई इकाई के रूप में चित्रित किया गया है।

विषय प्रवेश

आधुनिक हिंदी उपन्यासकारों में सुरेंद्र वर्मा, चित्रा मुद्‌गल, उषा प्रियंवदा, अनुसिंह चौधरी आदि के नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने अपने साहित्य के माध्यम से स्त्री की समस्याओं, अधिकारों एवं स्वतंत्र अस्तित्व को गंभीरता से प्रस्तुत किया। इन्होंने स्त्री को केवल आदर्श या पूजनीय रूप में नहीं बल्कि एक सामान्य मनुष्य के रूप में चित्रित किया। इन उपन्यासकारों द्वारा स्त्री की आकांक्षाएं, शोषण, आत्मनिर्भरता, संघर्ष, बदले की भावना आदि स्त्री के सभी मनोभावों का सूक्ष्मता से चित्रिण किया गया। प्रस्तुत शोध निबंध में इन उपन्यासकारों द्वारा लिखित ‘मुझे चाँद चाहिए’, ‘आवाँ’, ‘नदी’ तथा ‘भली लड़कियाँ, बुरी लड़कियाँ’ आदि उपन्यासों पर स्त्रीवाद की दृष्टि से चर्चा की गई है।

सुरेंद्र वर्मा हिंदी साहित्य के जाने-माने साहित्यकार के रूप में परिचित है। उनके द्वारा लिखित ‘मुझे चाँद चाहिए’ यह 1983 ई. में लिखा हुआ उपन्यास ‘साहित्य अकादमी’ पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। ‘मुझे चाँद चाहिए’ यह उपन्यास एक पुरुषद्वारा लिखे जाने के बावजूद स्त्रीवाद की आदर्श संकल्पना समेटे हुए हैं। इसकी नायिका वर्षा वशिष्ठ के संघर्षों, आकर्षणों एवं सफलताओं की यह कहानी है। छोटे से गाँव की वर्षा का विद्रोह पहली बार तब सामने आता है, जब वह परिवारद्वारा दिए गए नाम ‘यशोदा शर्मा’ को बदलकर वर्षा वशिष्ठ कर लेती है और पिता के ऐतराज करने पर कहती है कि, “अब हर तीसरे-चौथे के नाम में शर्मा लगा होता है। मेरे क्लास में ही सात शर्मा है। ....और यशोदा? घिसा-पिटा, दकियानूसी नाम। उन्होंने किया क्या था? सिवा कृष्ण

को पालने के।"[2] यह वह समय था जिस समय यशोदा का गुणगान करते-करते पूरे भारत का महिला वर्ग थकता नहीं था। उस समय यशोदा को लेकर वर्षा का यह विधान निश्चित ही साहसी था। वर्षा को अपना जन्म केवल विवाह और बच्चों पर न्यौछावर करना मंजूर न था। आगे जाकर वर्षा ऐसे कई काम करती है, जो उसके पिता के शब्दों में-"उनकी सात पीढियों में किसी ने नहीं किया था।" वर्षा का चरित्र यही स्पष्ट करता है-"स्त्री की सोच में बदलाव यह सबसे बड़ा परिवर्तन है। आज उसकी मंजिल मर्द नहीं है, न विवाह, न बच्चे, न घर, न शास्त्रसम्मत आदर्श स्त्री। आज वह समाज में एक स्वतंत्र इकाई के रूप में अपने आपको स्थापित करना चाहती है।"[3] वर्षा अभिनय कला को अपने भविष्य के तौर पर चुनती है। और परिवार के विरोध के बावजूद एक रोज तमाम बेड़ियाँ तोड़कर दिल्ली के नैशनल स्कूल ऑफ ड्रामा में पहुँच जाती है। प्रशिक्षण लेकर अनेक राष्ट्रीय-आंतरराष्ट्रीय फिल्मों में काम करते हुए वह स्वयं को सफल अभिनेत्री के तौर पर स्थापित करती है। छोटे से शाहजहाँपुर से दिल्ली आकर सफल अभिनेत्री बनने के उसके सफर में उसे कई प्रकार के संघर्षों से गुजरना पड़ता है। इस संघर्ष से वर्षा खुद के लिए स्वयं ही खड़ी होती है। वह महत्त्वाकांक्षी है, विद्रोही है और सबसे बढकर मनुष्य है। वर्षा का हर्ष के प्रेम में अपने आपको न्यौछावर करना, उसकी मृत्यु के पश्चात उसके बच्चे को बिना विवाह के जन्म देना, मोहमयी दुनिया में रहकर भी अपने आप को अन्य पुरुषों से दूर रखना, सफलता के लिए अपने उसुलों की कुर्बानी न देना, सुंदरता को सफलता की सीढी न बनाना, आत्मीय जनों का साथ देना, कठोर मेहनत, असमंजस क्षणों में स्थिर रहना आदि वर्षा के चरित्र के पहलू उसे व्यक्ति के रूप में बहुत ऊंचा उठाते हैं और शायद यही स्त्रीवाद है।

सन् 1999 में प्रकाशित 'आवां' उपन्यास में चित्रा मुद्‌गल जी ने भी इसी स्त्रीवाद को प्रखर स्वर प्रदान किया है। प्रस्तुत उपन्यास में उन्होंने कामकाजी नारी के संघर्ष का यथार्थ चित्रण किया है।"आर्थिक सक्षमता को हासिल करने के लिए कई बार पुरुष के साथ-साथ स्त्री को भी दहलीज पार करनी पड़ती है। लेकिन सामाजिक स्थितियाँ इसतरह से अनैतिक हो गई है कि स्त्री को कहीं भी राह नहीं मिली।"[4] 'आवां' उपन्यास इस वक्तव्य का परिचय देता है। उपन्यास का शीर्षक 'आवां' बहुत ही सार्थक और प्रतिकात्मक है। जिसप्रकार आवां में बर्तन धीरे-धीरे पकते हैं और मजबूती तथा परिपक्वता पाते हैं, उसी प्रकार इस उपन्यास में चित्रित स्त्री पात्र संघर्षों से गुजर

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

कर एक दृढता से परिपूर्ण बिंब रचते हैं। चित्रा जी लिखती हैं-"एक आवां होता है, आंच से दहकता। जिसकी पकावट से वह आकांक्षा की भीति उठाता है।"[5] यह विधान उपन्यास के विभिन्न स्त्री पात्रों से जुड़ी यातनापूर्ण घटनाओं एवं परिस्थितियों के रूप में प्रतिफलित होता दिखाई देता है। 'आवां' की नायिका नमिता को अपने आर्थिक अभावों एवं पारिवारिक तनावों के कारण नौकरी के लिए भागदौड़ करनी पड़ती है। इस भागदौड़ में उसे बार-बार यौन उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है। अमीर उद्योगपति संजय कनोई विवाहीत होने के बावजूद नमिता से प्रेम का नाटक कर, उसे केवल संतानोत्पत्ति का साधन मानता है। नमिता बिना विवाह के गर्भवती बन जाती है। गर्भपात के पश्चात कनोई की असलियत उसके सामने आती है। जिससे वह उसे त्यागकर मजदूर एवं पीड़ितों की सेवा में लग जाती है। अन्य नारी पात्र गौतमी और सुनंदा को भी पुरुष ने छला है। किंतु यहाँ पर एक बात लक्षणीय है कि यह नारियाँ धोखे के कारण दु:खी जरुर हुई है लेकिन अपना पूरा जीवन वे गम में ढोती हुई नहीं दिखाई देती। नमिता का कनोई को छोड़कर सेवाव्रत धारण करना, सुनंदा का बिना विवाह बच्ची को जन्म देकर उसकी परवरिश करना, इनके धैर्य का परिचायक है। पुरुष को अपने जीवन से निकालकर आगे बढना इनकी आधुनिक मानसिकता को व्यक्त करता है। गौतमी तो और एक कदम आगे है। वह पुरुष द्वारा किए गए शोषण के बदले पति का ही शोषण करती है। यहाँ पर लेखिका ने नई पीढी की असंतुलित सोच पर उंगली उठाई है।

उषा प्रियंवदा द्वारा 2014 ई. में लिखित 'नदी' उपन्यास में स्त्री का एक नया ही रूप सामने आता है । इसकी नायिका आकाशगंगा व्यक्तिवाद या स्व की ओर मुखरित होती हुई नज़र आती है। वैसे भी उषाजी की अन्य रचनाओं के नारी पात्र परंपरा एवं रुढियों को तोड़ते हुए विद्रोही रूप में नज़र आते हैं। आकाशगंगा एक ऐसी स्त्री है जो सही या गलत के चक्र में न पड़कर केवल स्वयं को संतुष्टि देने के लिए प्रयासरत दिखाई देती है। आकाशगंगा अमरीका में अपने पति की अर्धांगिनी बनकर एक ऐसे दोराहे पर पहुँच जाती है, जहाँ आकर पति ही सारे द्वंद्व के मूल का सूत्रधार बन बैठता है। बेटे की मृत्यु के लिए पति उसे जिम्मेदार मानकर, उसे अमरीका में ही छोड़कर वापस भारत आत है। पतिद्वारा त्यागने पर गंगा के जीवन में तीन पुरुष आते हैं, जिन्हें वह समर्पित हो जाती है। गंगा का इसतरह उन्हें समर्पित होना हजम नहीं होता। गंगा पढी-लिखी है, वह कोई छोटी-मोटी नौकरी कर

आत्मनिर्भर हो सकती थी। किंतु ऐसा न कर वह अपने लिए कोई न कोई कंधा ढूँढने में ही लगी रहती है। हमेशा समाज ने नारी को त्याग, समर्पण, बलिदान जैसे शब्दों से जोड़कर उसे बंधनों को निभाने के लिए मजबूर किया है। किंतु गंगा हमेशा वही करती है, जो उसे अच्छा लगता है। “वह समझ चुकी है कि पुरुषप्रधान व्यवस्था ने उसे मातृत्व और पत्नीत्व के सुंदर धोखे में रखने का षड्यंत्र सदियों से खेलना शुरू किया है। अत: वह इस खेल को समाप्त करने या निर्णय अपने पक्ष में करने के लिए प्रयत्नशील है।”[6] युगों से समाज स्त्री से जो अपेक्षा करता आ रहा है उसे लेकर वह समाज से ही सवाल करती है-“जहाँ हमें सीता की भूमिका निभाने के लिए बाध्य किया जाता है, वहाँ हम कुंती क्यों नहीं हो सकते?”[7] गंगा का यह सवाल संस्कृति के रक्षकों को शायद बोल्ड लगे किंतु जो समाज पुरुष के अनैतिक व्यवहार को नजरअंदाज कर स्त्री को हर बार सवालों के कटघरे में खड़ा करने की परंपरा निभाता आ रहा है लेखिका उसी समाज से ही इस सवाल का उत्तर माँगती है।

‘भली लड़कियाँ, बुरी लड़कियाँ’ उपन्यास अनुसिंह चौधरी ने सन् 2019 में लिखा है। इस उपन्यास का मूल विषय एक ऐसी घटना है, जो इस देश की हर सड़क पर, हर दिन होती दिखाई देती है। इसकी कहानी उन लड़कियों की बात करती है, जो अपनी लड़ाई लड़ने के लिए रास्ते तलाशती नहीं, बल्कि रास्ते खुद बनाने में विश्वास रखती है। उपन्यास की नायिका पूजा बारहवीं पास होकर आगे की पढाई के लिए आई.पी.एस. अफसर बनने का सपना लेकर गाँव से दिल्ली आती है। रूम पार्टनर के रूप में उसका सामना तीन ऐसी लड़कियों से होता है, जिन्हें समाज चरित्रहीन ही कहता है। सिगरेट-शराब पीती, क्लब जाती, तंग कपड़ों में अपनी आज़ादी सेलिब्रेट करती, बिनधास्त, बेबाक और बेपर्वा ये लड़कियाँ, जिनके केरेक्टर्स पर चरित्रहीनता या बुरी लड़की का टैग लगानेवाला यह समाज कैसे खुद इन्हें ऐसी सिच्युएशन में ढकेलता है, यह एक रहस्य की तरह पूजा के सामने खुलता है। पूजा दिल्ली की तेज रफ्तार को अभी पूरी तरह पकड़ नहीं पायी है कि वह संदीप से प्रेम कर बैठती है। पूजा का प्रेम संवेदनशील, शरीर से परे है। किंतु संदीप उसका शरीर ही चाहता है। वह अपने दो दोस्तों के साथ मिलकर पूजा पर सामूहिक बलात्कार कर देता है। किंतु पूजा और उसकी सहेलियाँ इसके इंसाफ के लिए पुलिस या अदालत के पास न जाकर स्वयं ही पूजापर गैंगरेप करनेवाले लड़कों की दिल्ली की सुनसान सड़क पर पीटाई करती

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

है। और खुद इसका वीडियों बनाकर सोशल मीडिया पर वायरल कर देती है। न्यूज चैनल पर मुलाकात के समय एंकर द्वारा उन्हें नसीहत देने पर ये चारों समाज के सामने सवाल उपस्थित करती हैं कि- "जब सुरक्षा की जिम्मेदारी अपनी है तो हमारी सुरक्षा और भरोसे के साथ खिलवाड़ करनेवाले को सरेआम सजा देने का हक हमें क्यों न हो।"[8] प्रस्तुत उपन्यास पाठकों के मन में हमारी समाज व्यवस्था, न्याय व्यवस्था, पीड़ित लड़की की यातना, उसकी ओर देखने का समाज का नज़रिया आदि को लेकर अनगिनत सवाल छोड़ जाता है। और लेखिका का यह अंतिम वाक्य भारतवर्ष की हर स्त्री की भयावह वास्तविकता की ओर निर्देश करता है कि-"आखिर वो कौन-सी लड़की होगी जिसके साथ जिंदगी में कभी-न-कभी उसकी मर्जी के खिलाफ कोई जबरदस्ती नहीं हुई होगी।"[9]

संक्षेप में यह कहना अनुचित न होगा कि विवेच्य उपन्यासों के यह स्त्री पात्र परंपराओं एवं सांस्कृतिक मान्यताओं से कटकर एक नई भावभूमि पर अपने व्यक्तित्व को निर्मित करने की चेष्टा कर रहे हैं। 'मुझे चाँद चाहिए' की वर्षा सही मायने में स्त्रीवाद जी रही है। अपने ऊपर होनेवाले अन्याय-अत्याचार एवं शोषण के पश्चात् जागृत होना और आरंभ से ही अपने व्यक्तित्व के प्रति सजग होना ये दोनों पूर्णता अलग बाते हैं। वर्षा दूसरी बात का प्रतिनिधित्व करती है और यही आदर्श स्त्रीवाद है। 'आवां' उपन्यास के नारी पात्रों द्वारा पति या प्रेमी को त्यागना या अपने मन के अनुसार जीना आसानी से नहीं हुआ है। बल्कि ये नारी पात्र तब जाकर जाग्रत हुए हैं, जब इन्हें कोई ठोकर लगती है। ठोकर खाकर ही सही ये नारियाँ अपने जीवन को दु:ख की संवाहिका नहीं बनाते बल्कि अपने बारे में एक अभिमत और उसके अनुसार स्वयं विकास करने की कोशिश में प्रयासरत दिखाई देते हैं। 'नदी' की आकाशगंगा के माध्यम से उषाजी ने स्त्री के निहायत बदलते रूप का चित्रण किया है। यह स्त्री पतिद्वारा त्यागने के गम को जीवनभर ढोने की अपेक्षा इसे अपनी आज़ादी, मुक्ति की राह मानती है और अपनी आत्मसंतुष्टि की राह पर चलती है। 'स्त्रीवाद' को हम आसान शब्दों में स्त्री के अधिकारों की लड़ाई कह सकते हैं। 'भली लड़कियाँ, बुरी लड़कियाँ' उपन्यास स्त्री के इन्हीं अधिकारों की हिमायत करता है। इसके नारी पात्र हमें सीखाते हैं कि जीवन मन और मस्तिष्क के सहयोग से जिया जाता है। ये वहीं करती है जो इन्हें अच्छा लगता है। खोखला आदर्शवाद ओढकर जीना इन्हें पसंद नहीं। और जब इन्हें ठोकर लगती है, तब ये अपने मस्तिष्क की सुनकर उसपर अमल करती है। ये

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429 Volume 6, Issue 7, June 2026 Impact Factor: 8.2

लड़कियाँ तयशुदा कायदे-कसौटियों को तोड़ती-मरोड़ती है। "ये लड़कियाँ कोई सिद्धांत, कोई फंडा नहीं समझती। लेकिन अपनी गलतियाँ मानना जानती है, अपने फैसलों की जिम्मेदारी उठाना, उन्हें दुरुस्त करना और एक-दूसरे के लिए खड़ी होना जानती है।"[10] और यही स्त्रीवाद की चरमसीमा है। स्त्री के लिए यही तो चाहिए कि वह खुद को समझे, खुद को खुशी दे, चाहे गलती हो भी तो उसका स्वीकार करें, उससे सीखें और अपनी तरह अन्य स्त्रियों का जरूरत पड़ने पर साथ दे।

निष्कर्ष :

विवेच्य उपन्यासों के नारी पात्र स्त्रीवाद के एक निहायत बदलते रूप को व्यक्त करते हैं। प्राचीन परंपराओं में जकड़ी नारी आज अपनी श्रृंखला को तोड़कर आज़ादी की तरफ पैर बढाती हुई, आत्मसंतुष्टि पाने का दृढ प्रयास करती नज़र आ रही है। स्वयं को सुख देने के प्रयास में वह पाश्चात्य संस्कृति का अनुसरण कर देह को ज्यादा महत्त्व देती हुई दिखाई दे रही है। उसके लिए विवाह संस्था समाजव्यवस्था की मजबूत शर्त न होकर वह प्रेम का आधार माँगने लगी है। आज की स्त्री श्लील-अश्लील, नैतिक-अनैतिक, पाप-पुण्य की परिभाषा भूलती नज़र आ रही है। विवेच्य उपन्यासों में स्त्री को पारंपरिक आदर्श रूप में चित्रित करने की जद्दोजहद छोड़कर उसका मानवतावादी चित्रण किया गया है। प्रस्तुत उपन्यास स्त्री की गलतियाँ, कमियाँ-खामियाँ आदि का सहज-स्वाभाविक रूप से चित्रण करते हैं। उसमें गुण-दोष दोनों है। वह कभी भ्रमित होती है, कभी संघर्ष करती है, कभी हारती है और फिर उठ खड़ी होती है। समाज पुरुष की गलतियाँ 'पुरुष है चलता है' कहकर माफ करता है, जबकि वही संवेदनाएं स्त्री में भी होती है। तो जब स्त्री गलती करती है, तो वह भी समाज से मानवीय व्यवहार की अपेक्षा करती है। किंतु जब उन्हें न्याय नहीं मिलता तो विद्रोह पर उतर आती है और अपने इंसाफ की लड़ाई स्वयं ही लड़ती है। समाज की नज़र में जो बुरी लड़कियाँ बन बैठी है, ऐसा बनने का इन्हें कतई शौक नहीं है। इनके भली से बुरी बनने के सफर का चित्रण बहुत यथार्थता से विवेच्य उपन्यास करते हैं। नारी का यह जो चित्र इन उपन्यासों में सामने आता है, इस परिवर्तन का कारण हम दस-बीस वर्षों या एक सदी में नहीं ढूँढ सकते। बल्कि प्राचीन काल से समाज ने स्त्री का

ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 7, June 2026
Impact Factor: 8.2

जो शोषण किया है उसकी प्रतिक्रिया के रूप में उसका यह बोल्ड रूप समाज के सन्मुख उभरता नज़र आ रहा है। इसलिए जरूरी है कि केवल नारी के वर्तमान रूप को देखकर उसके गुण-दोषों की चर्चा करने की बजाय उसके शोषित इतिहास पर भी एक दृष्टि डाली जाए तो शायद स्त्रीवाद समझने में आसानी होगी।

संदर्भ सूची :

1. डॉ. मनीषा, हिंदी लेखिकाओं के कथा साहित्य में नारी जीवन, वान्या पब्लिकेशन, कानपुर (उ.प्रदेश), प्र.सं. 2021 ई., पृ.13
2. वर्मा सुरेंद्र, मुझे चाँद चाहिए, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नई दिल्ली,प्र.सं.1983 ई. पृ. 14
3. चंद्रा डॉ.मुदिता, टोप्पो डॉ. सुलक्षणा, आधुनिक एवं हिंदी कथा साहित्य में नारी का बदलता स्वरुप, भावना प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2008 ई, पृ.9
4. भोसले (संपा.) डॉ. सदानंद, इक्कीसवीं सदी के शिखर उपन्यासों में संवेदना, विकास प्रकाशन, कानपुर (उ.प्रदेश), प्र.सं. 2015 ई., पृ. 43
5. मुद्गल चित्रा, आवां, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 1999 ई., पृ. 75
6. देसाई डॉ. रघुनाथ, हिंदी-मराठी महिला नाट्यलेखन में नारीवाद, ए.बी.एस्. पब्लिकेशन, वाराणसी (उ.प्रदेश), प्र.सं. 2012 ई., पृ. 138
7. प्रियंवदा उषा, नदी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्र.सं. 2014 ई., पृ. 74
8. चौधरी अनुसिंह, भली लड़कियाँ, बुरी लड़कियाँ, हिंदी युग्म प्रकाशन, उ.प्रदेश, प्र.सं. 2019 ई., पृ. 169
9. वही, पृ. 171
10. वही, पृ. 173

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-37550